

● कविताएं...

लिखो मेरी कहानी...



लिख सकते हो तो  
लिखो मेरी कहानी  
पर नहीं लिख पाओगे  
क्योंकि मैं जिंदगी हूँ  
जिसे परिभाषित न कर पाया कोई  
यद्यपि जीते हैं सब  
सह सकते हो तो  
सहकर देखो मेरी तरह  
लेकिन सह न पाओगे  
मेरी तरह अत्याचार और पीड़ा  
हां, मैंने देखा है प्यार  
तो तिरस्कार भी देखा है  
तुमने चांद पर बैठा दिया मुझे  
तो पाताल से भी नीचे  
नरक में धकेल दिया  
फिर भी  
जब-जब देखती हूँ  
तुम्हें जरूरत है मेरी  
चली आती हूँ  
कई रूप धरकर तुम्हारे पास  
-अंजना वर्मा

दोस्त...



मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता  
था,  
तुम मुझे परख रहे थे  
मैंने खुद को छोड़ दिया था,  
परखा जाने के लिए  
काफी समय लगा  
तुम मुझमें भी कुछ देख पाए  
मेहनत की मैंने भी काफी  
अपने भीतर  
कुछ तो भी पैदा करने के लिए  
मैं ऐसी हजार बातों पर चुप रहा  
जिनसे बिगड़ सकता था अपना  
मेल  
तुम्हारी हजार बातों का मुरीद  
हुआ मैं  
हम दोनों की दोस्ती यों ही नहीं  
हो गई  
हमें आगे बढ़ना पड़ा  
वहां से  
जहां हम खड़े थे।  
-रविकांत

● कहानी/-रवींद्रनाथ टैगोर...

## धन की भेंट...

वृन्दावन कुण्डू क्रोधावेश में अपने पिता के पास आकर  
कहने लगा- मैं इसी समय आपसे विदा होना चाहता  
हूँ।

उसके पिता जगन्नाथ कुण्डू ने घृणा प्रकट करते हुए  
कहा- अभागो! कुतघ्न! मैंने जो रुपया तेरे पालन-पोषण  
पर खर्च किया है, उसे चुका कर ही ऐसी धमकी देना।

जिस प्रकार का खान-पान जगन्नाथ के घर चला करता  
था उस पर कुछ अधिक व्यय न होता था। भारत के  
प्राचीन ऋषि मितव्ययता के लिए ऐसी ही वस्तुओं का  
प्रबन्ध कर लिया करते थे। जगन्नाथ के व्यवहार से ज्ञात  
होता था वह इस विषय में उन ऋषियों ही के निर्मित  
आदर्शों पर चलना पसन्द करता था। यद्यपि वह पूर्णरूप से  
इस आदर्श को निबाहने में असमर्थ था। इसका कारण  
कुछ यह समझा जा सकता है कि जिस समाज में उसका  
रहन-सहन था वह अपने प्राचीन आदर्शों से बहुत पतित  
हो चुका था और कुछ यह कि उसकी आत्मा को शरीर के  
साथ मिलाये रखने के विषय में प्रकृति की उत्तेजना तीव्र  
और युक्तियुक्त-संगत थी।

जब तक वृन्दावन अविवाहित था, उसका निर्वाह  
जैसे-तैसे चलता रहा, किन्तु विवाह के पश्चात उसने सीमा  
से बाहर इस उत्तम और सुन्दर आदर्श को, जो उसके  
महामना पिता ने निर्मित कर रखा था, त्यागना शुरू कर  
दिया। ऐसा ज्ञात होता था कि सांसारिक सुख-ऐश्वर्य के  
सम्बन्ध में उसके विचार आध्यात्मिकता से शारीरिकता की  
ओर परिवर्तित हो रहे हैं और खाने-पीने की न्यूनता से उसे  
भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी और जो कष्ट भी सामने आते हैं,  
उसने उन्हें सहना पसन्द न करके संसार के साधारण  
व्यक्तियों के आचरण का अनुकरण करना आरम्भ कर  
दिया।

जब से वृन्दावन ने अपने पिता के निर्मित उच्च आदर्श  
को त्यागा, तभी से पिता और पुत्र में कलह आरम्भ हो  
गई। इस कलह ने चरम-सीमा का रूप उस समय धारण  
किया, जब वृन्दावन की पत्नी अधिक रुग्ण हुई और  
उसकी चिकित्सा के लिए एक वैद्यराज बुलाया गया। यहां  
तक का व्यवहार भी क्षमा करने के योग्य था; किन्तु जब  
वैद्यराज ने रोगी के लिए एक अधिक मूल्य की औषधि  
का निर्णय किया, तो जगन्नाथ ने समझ लिया कि वैद्यराज  
अयोग्य है और वैद्यक के नियमों से बिल्कुल अपरिचित।  
बस उसने उसी समय उनको मकान से बाहर निकलवा  
दिया। वृन्दावन ने पहले तो पिता से काफी अनुनय-विनय  
की कि औषधि जारी रहे-फिर झगड़ा भी किया, परन्तु पिता  
के कान पर जू तक न रेंगी। अन्त में जब पत्नी स्वर्ग  
सिंघार गई तो वृन्दावन का क्रोध अधिक बढ़ गया और  
उसने अपने पिता को उसका प्राण-घातक ठहराया।

जगन्नाथ ने स्वभावानुसार उसको समझाने का बहुत  
प्रयत्न किया और कहा- तुम कैसी नामसझी की बातें करते  
हो? क्या लोग विभिन्न प्रकार की औषधि खाकर नहीं  
मरते; यदि मूल्यवान औषधियां ही मनुष्य को जीवित रख  
सकती तो बड़े-बड़े राजा-महाराजा क्यों मरते? इससे पहले

● शायरी...



जीते-जी कूचा-ए-दिलदार से जाया  
न गया  
उसकी दीवार का सर से मेरे साया न गया  
गुल में उसकी सी जो बू आई तो आया  
न गया  
हमको बिन दोश-ए-सबा बाग से लाया न  
गया  
◆◆◆  
दिल में रह दिल में कि मे मीर-ए-कजा से  
अब तक



जिस युग की  
चर्चा हम कर रहे  
हैं, उन दिनों  
अंग्रेज भारत में  
नए-नए आये  
थे; किन्तु उस  
समय भी इस  
देश के बड़े-बूढ़े  
अपनी-अपनी  
औलाद के  
स्वभाव-विरुद्ध  
ढंग पर आश्रय  
और विकलता

प्रकट किया करते  
और अन्त में जब  
उनकी एक न  
चलती तो अपने  
मुंह से लगे हुए  
हुकों से सान्त्वना  
प्राप्त करने का  
प्रयत्न करते।  
वास्तविकता यह  
है कि जिस समय  
मामला चरम-  
सीमा को पहुंच  
गया तो वृन्दावन  
से न रहा गया...

तुम्हारी मां और दादी मर चुकी हैं, बहू भी मर गई  
तो क्या हुआ? समय आने पर प्रत्येक व्यक्ति को  
यहां से कूच करना है।

वृन्दावन यदि इस प्रकार दुःखी और सचेत  
होकर वास्तविक परिणाम पर पहुंचने में योग्य न  
होता, तो सम्भव था कि वह इन बातों से कुछ  
सान्त्वना प्राप्त कर लेता। इससे पहले मरने के समय  
उसकी मां और दादी ने औषधि न पी थी और  
औषधि सेवन न करने की यह रीति बहुत पहले से  
इस खानदान में चली आई है। नई पौध का चरित्र  
इतना बिगड़ चुका है कि वह पुराने ढंग पर मरना भी  
पसन्द नहीं करती।

जिस युग की चर्चा हम कर रहे हैं, उन दिनों  
अंग्रेज भारत में नए-नए आये थे; किन्तु उस समय  
भी इस देश के बड़े-बूढ़े अपनी-अपनी औलाद के  
स्वभाव-विरुद्ध ढंग पर आश्रय और विकलता प्रकट  
किया करते और अन्त में जब उनकी एक न चलती  
तो अपने मुंह से लगे हुए हुकों से सान्त्वना प्राप्त  
करने का प्रयत्न करते।

वास्तविकता यह है कि जिस समय मामला  
चरम-सीमा को पहुंच गया तो वृन्दावन से न रहा  
गया और उसने आवेश तथा विकलता के साथ  
अपने पिता से कहा-मैं जाता हूँ।

पिता ने उसे दृढ़ देखकर उसी समय आज्ञा दे दी।  
और घोषणा करते हुए कह दिया- चाहे देवता  
मेरे ढंग को गौहत्या के समान क्यों न समझें, मैं  
शपथ खाकर कहता हूँ कि तुम्हें अपनी धन-संपत्ति  
से एक कौड़ी भी नहीं दूंगा।

यदि मैं तुम्हारी एक पाई तक को भी हाथ लगाऊं  
तो उस व्यक्ति से भी नीच होऊंगा जो अपनी मां को  
बुरे भाव से देखता है। वृन्दावन के मुख से आवेश  
में निकल गया।

गांव के निवासियों ने अपने-जैसे विचारों के,  
लम्बे-चौड़े वाद-विवाद के पश्चात उस छोटे-से  
परिवर्तन-भरे झगड़े को संतोषपूर्वक देखा। जगन्नाथ  
ने चूँकि अपने बेटे को अपनी संपत्ति से वंचित कर  
दिया था, अतः प्रत्येक व्यक्ति उसे सान्त्वना देने का  
प्रयत्न कर रहा था। वे सब इस विषय में सहमत थे  
कि केवल पत्नी की खातिर पिता के साथ झगड़ा

करने का दृश्य इस नए युग में ही देखा जा सकता  
है। इसके सम्बन्ध में वे स्वयं जो कारण बताते थे वे  
भी बहुत असंगत थे। वे कहते थे यदि किसी की  
पत्नी मर जाये तो बड़ी सरलता से दूसरी प्राप्त कर  
सकता है, पिता मर जाये तो संसार-भर के धन-  
ऐश्वर्य के बदले में भी उसे प्राप्त नहीं कर सकता।

इस बात में सन्देह नहीं कि उनका उपदेश हर  
प्रकार से ठीक था; किन्तु हमें सन्देह है कि दूसरा  
पिता प्राप्त करने की पीड़ा उस पथ-भ्रष्ट बेटे को कहां  
तक प्रभावित कर सकती थी। इसके विरुद्ध हमारा  
विचार यह है कि ऐसा अवसर आता तो वह उसे  
ईश्वरिय अनुकम्पा में सम्मिलित समझता।

वृन्दावन के अलग होने का दुःख उसके पिता  
जगन्नाथ को तनिक भी अनुभव न हुआ। इसके कुछ  
विशेष कारण थे। एक तो यह कि उसके चले जाने  
से घर का खर्च कम हो गया, दूसरे हृदय से एक  
भारी चिन्ता दूर हो गई, हर समय उसे इस बात का  
भय रहता था कि मेरा बेटा मुझे विष देकर न मार  
दे। जब कभी वह अपना थोड़ा-सा भोजन करने  
बैठता तो यही विचार उसे विकल कर देता कि इसमें  
विष न मिला हुआ हो। यही चिन्ता किसी सीमा तक  
वृन्दावन की पत्नी का स्वर्गवास हो जाने पर दूर हो  
गई थी, किन्तु अब वह बिल्कुल ही न रही।

जिस प्रकार घने अधियारे बादलों में चमकीली  
बिजली और भयंकर तूफानी समुद्र में बहुमूल्य रत्न  
विद्यमान रहते हैं, उसी प्रकार बूढ़े जगन्नाथ के कठोर  
हृदय में भी एक निर्बलता शेष थी। वृन्दावन जाते  
समय अपने साथ अपने चार-वर्षीय पुत्र गोकुलचन्द्र  
को भी ले गया था। चूँकि उसकी खुशक और वस्त्रों  
का खर्च बहुत न्यून था इसलिए जगन्नाथ को उससे  
बहुत प्रेम था। जाते समय जब वृन्दावन उसे अपने  
साथ ले गया तो सबसे पहले दुःख और पछतावे की  
अपेक्षा उसने अपने मन में हिसाब करना शुरू किया  
कि इन दोनों के चले जाने से खर्च में कितनी कमी  
हो जाएगी। इस बचत की वार्षिक रकम कहां तक  
पहुंचेगी और इस बचत को यदि किसी रकम का  
सूद समझा जाए तो उसका मूलधन कितना हो  
सकेगा?

-जारी

● उम्मीद...

आंख का इलाज कराने जाते  
पिता से दस कदम आगे चलता हूँ मैं  
आंख की रोशनी लौटने की उम्मीद में  
पिता की आंखें चमकती हैं उम्मीद से  
उस चमक में मैं उन्हें दिखता हूँ  
दस कदम आगे चलता हुआ।

-मंगलेश डबराल

तुम से छूट कर भी तुम्हें भूलना आसान न था  
तुम को ही याद किया तुमको भुलाने के लिए।

-निदा फाज़ली



-मीर तक़ी मीर